Journal *de* Brahmavart
Volume one ,Issue one
ISSN 2394- 6326

Quarterly Published by
Brahmavart Research Institute
7A/1 Aman Patel Complex
Vishnupuri Kanpur U.P. India

भारत में आधुनिक □शक्षा का प्रादुर्भाव

डॉ. अतुल कुमार शुक्ला
अ□सस्टेंट प्रोफेसर □शक्षा संकाय
पं□त जे.एल.नेहरु पी.जी. कॉलेज बाँदा

भारत वर्ष एक बहुत प्राचीन दे ा है। इसका इतिहास किसी न किसी रूप में मानव जाति के जन्म से ही खोजा जा सकता है। मोहन जोदड़ों की खुदाई ने भारतीय इतिहास को लगभग पांच सहस्त्र वर्शों की प्रामाणिकता प्रदान की है। प्राप्त अव ोशों से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह नगर पांच हजार साल पहले मौजूद था और उस वक्त भी वहाँ एक पुरानी और विकसित सभ्यता कायम थी।[1] मुगल काल में अकबर जैसे उदार तथा धार्मिक समन्वय में वि वास करने वाले एवं औरंगजेब जैसे कट्टर धर्मार्थ भाासकों ने भारतीयों पर विभिन्न प्रकार की छाप डाली। ''हिन्दू संस्कृति पर इस्लाम का गंभीर प्रभाव पड़ा है।''[2] ि ाल्प तथा संगती के क्षेत्र में इस्लाम का भारत पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। हिन्दुओं के लिये पर्दा प्रथा भी एक विशिष्ट मुस्लिम देन है।

मुसलमानों के बाद पन्द्रहवीं शताब्दी से ही यूरोपियों का आना आरम्भ हो गया। यूरोप से आने वाले सभी जातियाँ (पुर्तगाल, डच, फ्रान्सीसी अंग्रेजों) में यह कहकर संघर्ष चलते रहे कि ''कौन भारतवासियों को सम्य बनाता है और कौन इस दीक्षा की दक्षिणा वसूल करता है।[3]

अंग्रेजों ने विभाजित करों और राज्य करों के सिद्धान्त को सभी प्रकार कार्यान्वित कर उन्होंने भारतीयों को देशद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया।[4] पारस्परिक वैमनस्य से भरपूर उस समय की असंगठित भारतीय जनता एवं शासकों को भ्रमित कर अपना आधिपत्य स्थापित करने में अंग्रेजों को अधिक समय नहीं लगा।

---

1 नेहरू, जवाहर लाल, हिन्दुस्तान की कहानी, पृ0 13–14
2 ताराचन्द –इन्फ्लुऐन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, पृ0 136
3 दिनकर रामधारी सिंह–संस्कृति के चार अध्याय, पृ0–292
4 सत्यपाल, प्रबोधचन्द्र – सिक्सटी इयर्स आफ कांग्रेस, पृ0– 51–52

सन् 1857 तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने लगभग 3/5 भारत को प्रत्यक्ष रूप से अपने प्रभुत्व में ले लिया था और शेष भाग को अप्रत्यक्ष रूप से इसके अधीन रहना पड़ा रहा था। इस सबके प्रतिरोध स्वरूप सन् 1857 में भारतीय जनता ने स्वतन्त्र रहने के लिए महान क्रान्ति की। ''भारत में आने वाले सभी विदेशी जानते थे कि भारत धन तथा ज्ञान दोनों का आगार है।''[5] इस से लालायित होकर सब यहाँ आते रहे। विदेशियों के आगमन से इस कुछ शताब्दियों के इतिहास के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस अवधि में उससे पूर्व के सामाजिक संगठन, आर्थिक एवं राजनैतिक गठन का सभ्यता और संस्कृति में अनेक परिवर्तन हुये है। इसमें मुसलमानों का प्रभाव इस कारण अन्य सभी से विशिष्ट रहा हे कि वह यहाँ के निवास बनकर यहीं रह गये। पुर्तगीज, डच तथा फ्रान्सीसी यहाँ बहुत कम समय तक रहे। इस कारण उनमें से किसी की कोई विशेष छाप यहाँ नहीं पड़ सकी। यह सत्य है कि एक शताब्दी से भी अधिक समय तक अंग्रेज भारत में शासन करते रहे, किन्तु वे यहाँ के नागरिक नहीं बने। फिर भी उनके दीर्घकालीन सम्पर्क ने यहाँ के सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन पर अमिट छाप डाली है। उन्होंने प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को पाश्चात्य रंगों की तूलिका से रंग दिया।

जो भी विदेशी यहाँ आया उन्होंने यहाँ की शिक्षा, समाज आदि पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव अवश्य डाला। इसी प्रकार पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रसार एवं प्रचार भी सारे देश में हुआ। क्रिश्चियनों ने अपने प्रचार के लिए अलग–अलग संस्थायें खोल रखी थी। इनका मुख्य काम केवल धर्म का प्रचार करना था। बल का सामना हम शक्तिशाली होकर कर सकते हैं पर ईसाई धर्म के नए तरह के प्रचार ने भारतीय परम्परा के लिए एक संकटकालीन परिस्थिति को जन्म दिया जगह–जगह धर्म प्रचारकों के जाल बिछ गये। संस्थायें मोहल्ले, नगर कोई स्थान ऐसा नहीं बचा जो उनके कार्य क्षेत्र का अंग न बना हो। मैकाले की शिक्षा योजना ने देश के धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक अस्तित्व पर एक करारी चोट की। इस प्रकार से भारतीय पाश्चात्य संस्कृति शिक्षा से परिपूर्ण हो गया था। भारतीय समाज में साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता आदि भी अधिक व्याप्त थी ऐसी ही परिस्थितियों में गाँधी जी ने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। उन्होंने धीरे–धीरे जनशक्ति को जागरूक तथा प्रबल बनाकर 1947 में भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराया। इसके साथ ही साथ गाँधी जी ने सामाजिक, शैक्षिक एवं धार्मिक जैसी देश की परिस्थितियों को एक नया आयाम दिया। उनका आकर्षक व्यक्तित्व सम्पूर्ण देश की प्रेरणा का विषय बन गया।

xk/kh th dk 'kf{kd n'ku dk ey vk/kkj %

शिक्षा गाँधी जी के लिये आजादी की लड़ाई का साधन थी। गाँधी जी अहिंसक क्रान्ति में विश्वास रखते थे और अहिंसक क्रान्ति बिना शिक्षा के, बिना मानव परिवर्तन के सम्भव नहीं थी।

एक ओर गाँधी जी की शिक्षा राष्ट्रीय दृष्टिकोण था जिसमें वे शिक्षा का प्रयोग देश की आजादी की लड़ाई के लिये करना चाहते थे दूसरी ओर उनका मानववादी दृष्टिकोण था। राष्ट्रीय दृष्टिकोण का स्वरूप ज्यों–ज्यों गाँधी जी अंग्रेजी हुकूमत से संघर्ष में उलझते गये, त्यों–त्यों और स्पष्ट होने लगा। 1920–21 के अहसयोग आन्दोलन में गांधी जी ने अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के ऊपर विशेष दायित्व डाला और उनसे स्कूल और कालेज छोड़ने को कहा। गाँधी जी केवल विघटनकारी विध्वंसक दृष्टिकोण नहीं रखते थे, उनका

5 दिनकर रामधारी सिंह – संस्कृति के चार अध्याय, पृ0–401

दृष्टिकोण रचनात्मक रहता था। इसलिए उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत द्वारा चलाई गई अनुपयोगी शिक्षा के विकल्प स्वरूप राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना का आन्दोलन चलाया और देश में कई ऐसे राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित हुये।

गाँधी जी ने कहा कि केवल विद्यार्थियों की सहायता से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है और उन्हीं की दुर्बलता के कारण हम लोग विदेशी हुकूमत के गुलाम रहेंगे। अन्य किसी बात का जनता एवं शासकों पर इतना प्रभाव नहीं होगा जितना एक दिन में विद्यार्थियों के स्कूल और कालेज छोड़ देने से।

गाँधी जी के ऊपर बहुधा यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने विद्यार्थियों को स्कूल कालेज छोड़े देने के लिये निमंत्रित कर ठीक नहीं किया, लेकिन वास्तविक स्थिति यह है कि शिक्षा जीवन की प्रक्रिया है, एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिये राजनीति से उसी प्रकार अलग नहीं रह सकती जैसे आर्थिक एवं अन्य समस्याएं जीवन से अलग नहीं रह सकती। इतिहास के अनुसार बिना नवयुवकों एवं विद्यार्थियों के कोई क्रान्ति अथवा परिवर्तन नहीं होते हैं।

आजादी के पूर्व एवं आजादी के बाद गाँधी जी के दृष्टिकोण में कुछ अन्तर आया। उन्होंने 1948 में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा– ''विद्यार्थियों में कोई पार्टी पालिटिक्स नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों में कोई समाजवादी, कम्युनिस्ट, कांग्रेस और दूसरे ग्रुप नहीं होनी चाहिए। वे सर्वप्रथम विद्यार्थी हैं और उन्हें अधिक से अधिक ज्ञान, अर्जित करना चाहिए और वह भी जनता की सेवा के लिए नौकरी पाने के लिए नहीं।''[6]

गाँधी जी के शिक्षा दर्शन में रचनात्मक कार्यक्रम का विशेष महत्व था। गाँधी जी का शिक्षा दर्शन केवल राष्ट्रीय सीमाओं में ही नहीं बँधा था। उन्होंने बुनियादी शिक्षा का प्रतिपादन करते हुए कहा था कि इसके पीछे सत्य और अहिंसा का सिद्धान्त निहित है। अहिंसा और शान्ति का जो संदेश गाँधी जी ने दिया वह अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आज भी स्थायी प्रभाव रखता है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण करना है।

गाँधी जी का मत था कि ऐसी शिक्षा और ऐसा ज्ञान जो आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से मुक्ति नहीं प्रदान करता वह शिक्षा और ज्ञान नहीं कहा जा सकता। पाठ्यक्रम में गाँधी जी आत्मा को शिक्षित करने को बड़ा महत्व देते थे। वे सामान्यतः धार्मिक और नैतिक शिक्षा को महत्व देते थे वे कहते थे कि शिक्षा में स्वावलम्बन आत्मनिर्भरता की शिक्षा दी जाये वहीं सबसे बड़ी शिक्षा धार्मिक शिक्षा है।

आश्रम की शिक्षा प्राचीन काल में प्रचलित थी, गाँधी जी सर्वांगीण शिक्षा के लिए आश्रम विधि को अत्यन्त श्रेयस्कर समझते थे। शिक्षण विधि का मूल आधार आत्मनिर्भरता थी। गाँधी जी की शिक्षण विधि में उपवास को भी महत्वपूर्ण स्थान था। त्रुटियों के लिए प्रायश्चित करना यह जीवन की सबसे बड़ी शिक्षा है।

आज समस्त शिक्षा योजनाओं की असफलता का यही कारण है कि विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे शारीरिक श्रम करें, हाथ का काम करें, आत्मनिर्भर बने परन्तु स्वयं शिक्षक हाथ से काम नहीं करना चाहता। शिक्षक परावलम्बी हो और विद्यार्थी से यह आशा की जाय कि वह स्वावलम्बी बनेगा, यह कोरी कल्पना है। गाँधी जी ने मौखिक शिक्षा पर भी बल दिया है उनके विचार से मौखिक पद्धति अधिक रसयुक्त टिकाऊ होती है। गाँधी

---

[6] गाँधी, मो0 क0, टुवर्डस न्यू एजूकेशन, पृ0 – 104

जी बच्चों को शारीरिक दण्ड देने के विरूद्ध थे। क्योंकि शिक्षक उसमें पशुबल का प्रतीक बन जाता है क्योंकि दण्ड के पीछे क्रोध की भावना रहती है।

बच्चों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये कि उनमें स्वयं यह विवके आ जाये कि वे अच्छे–बुरे की पहचान करके सही आचरण कर सकें। उन्होंने कहा कि मनुष्य न केवल मस्तिष्क है न केवल शरीर है और न केवल आत्मा अथवा हृदय है। इन तीनों का समन्वय मनुष्य के समुचित विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा वास्तव में बालक के सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया है। बुनियादी शिक्षा गांव की किसी बुनियादी दस्तकारी के माध्यम से दी जानी चाहिए। इसलिए हर एक क्रिया शिक्षा का माध्यम नहीं बन सकती। केवल वहीं दस्तकारियाँ शिक्षा का माध्यम बन सकती हैं जो युगों से मनुष्यों के साथ जुड़ी है और जो मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। बुनियादी से केवल प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा का तात्पर्य नहीं है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा मुख्यतः ग्रामों के लिए थी। 1944 में गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की सीमाओं में विस्तार किया और उसे आजीवन शिक्षा का स्वरूप दिया। आजीवन शिक्षा की चर्चा इस देश में अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन की रिपोर्ट (1972) से प्रारम्भ हुई।

xk/kh th dk f'k{kk n'kZu %

1- vkn'kZokn dk ifjis{; esa :

जहाँ तक ईश्वर में विश्वास का प्रश्न है, गाँधी जी आदर्शवादी थे वह यह विश्वास करते है कि ईश्वर या आदि शक्ति स्वयं पूर्ण और अनन्त है। उन्होंने सदैव शरीर के सन्दर्भ में आत्मा की सर्वोपरिता स्वीकार की। उनकी धार्मिकता में सब धर्मों के प्रति समान भाव अनिवार्य था।

2- izd`frokn dk ifjis{; esa%

गाँधी जी आदर्शवादी होते हुए भी एक अर्थ में प्रकृतिवादी थे। वे कृत्रिम जीवन, कृत्रिम संस्कृति के विरोध में प्राकृतिक एवं ग्रामीण संस्कृति के समर्थक थे और अपनी आवश्यकतायें कम से कम रखना चाहते थे।

3- iz;kxokn dk lUnHkZ esa %

गाँधी जी शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते थे। सत्य अथवा जीवन के मूल्य गाँधी जी के विचारों के अनुसार परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करते। उपयोगिता को जीवन के क्रिया–कलापों का आधार बनाना गाँधी जी के लिए सार्थक हो सकती है। वास्तव में गाँधी जी जी निष्काम कर्म के प्रतिपादक थे और परिणामों या फल से किसी कार्य को परिभाषित नहीं करते थे। गाँधी जी का धरातल भौतिकवादी नहीं था उनका धरातल शुद्ध आध्यात्मवादी था।

4- ;FkkFkZokn dk ifjis{; esa %

शिक्षा दर्शन की एक महत्वपूर्ण विचारधारा ''यथार्थवाद'' है। वास्तव में यथार्थवाद कोई स्वतंत्र दर्शन नहीं है। वह भौतिकवाद का ही एक स्वरूप है। यथार्थवाद में सत्य वहीं है जो प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके। गाँधी जी ने शिक्षा पर बल देकर उन्होंने देश की वास्तविक समस्याओं को हल करने का प्रयास किया। ईश्वर और धर्म से अधिक शिक्षा में उन्होंने उद्योग पर बल दिया। गाँधी जी ने उद्योग पर अवश्य बल दिया किन्तु उनका मुख्य उद्देश्य अर्थोपार्जन नहीं था, बल्कि बालक का सर्वांगीण विकास करना था, जिसमें आध्यात्मिक और चारित्रिक विकास विशेष स्थान रखते थे। वे विद्यार्थी को संगम, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह की शिक्षा देना चाहते थे, उद्योग केवल माध्यम था।

शिक्षा दर्शन की विभिन्न विचारधाराओं के परिप्रेक्ष्य में यह देखा गया कि गाँधी मुख्यतः आध्यात्मवादी दार्शनिक थे। किन्तु उन्होंने जीवन को समग्ररूप में, सार्वभौम रूप में देखा था। जहाँ एक ओर वे आध्यात्मकवादी दर्शन पर बल देते थे, वहीं जीवन की वास्तविकता को भी ध्यान में रखते थे। रूढ़ियों के वे घोर विरोधी थे। इसी कारण उनके आध्यात्मवादी होते हुए भी उन्हें प्रकृतिवादी, प्रयोजनवादी और यथार्थवादी समझा जाता है।

xk/kh th d: f'k{kk lEcU/kh dN i:;kx ½

गाँधी जी के शिक्षा दर्शन को समझने के लिये यह आवश्यक है कि उनके शिक्षा सम्बन्धी क्रिया–कलापों एवं प्रयोगों का सिंहावलोकन कर लिया जाय, क्योंकि क्रियाकलापों एवं प्रयोगों से मनुष्य के बहुत से चिन्तन और दर्शन के आयाम स्वतः स्पष्ट हो जाते हैं। उनके शिक्षा सम्बन्धी कुछ प्रयोग निम्न हैः–

1- QhfuDl vkJe ¼1904½ ½

टाल्सटाय तथा रस्किन का प्रभाव गाँधी जी पर अत्याधिक था और उन्होंने टाल्सटाय को अपने गुरू के रूप में माना था।[7]

टाल्सटाय तथा रस्किन की मूल शिक्षा को क्रियान्वित करने हेतु तथा इसके साथ ही दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिश हुकूमत में रहने वाले भारतीयों की सहायता करना था इस हेतु वे फीनिक्स योजना के संचालन में सम्मिलित हुए।

फीनिक्स स्कूल के उद्देश्य व्यवस्था वेशभूषा, रहन–सहन अध्यापकों पर उनके विचार बिन्दु निम्नवत् हैंः–

1. जो बच्चे फीनिक्स में बोर्डर के रूप में आयेंगे उनके साथ सभी लोग अपने बच्चों की भॉति व्यवहार करेंगे।
2. जीवन में सादगी रखने के लिये उन्होंने बच्चों के लिये भोजन के साथ–साथ वेशभूषा भी निर्धारित की।
3. फीनिक्स स्कूल स्वावलम्बन की योजना से ओत–प्रोत था।[8]
4. पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में गाँधी जी लिखते हैं :–
   ''इस पाठशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों के चरित्र का विकास करना है, सच्ची शिक्षा वह है जिसमें बालक स्वयं पढ़ना सीखे, अर्थात उनमें ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हो।''

2- VkY lVk; Qke ¼1908½ ½

ट्रासवाल में गाँधी जी ने भारतीयों के विरूद्ध लागू किये गये एमीग्रेशन एक्ट के विरूद्ध सत्याग्रह किया तो सत्याग्रहियों के परिवारों को देखने का प्रश्न आया। इसमें उनकी सहायता हरनाम कैलेनबैक ने की जो कि जोहान्सबर्ग के सम्पन्न वास्तुकार और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों के व्यक्ति थे उन्होंने 1200 एकड़ का टाल्सटाय फार्म सत्याग्रहियों के परिवारों को रहने के लिए दे दिया था। गाँधी जी ने कहा कि कैलेनबैक में तीव्र भावना, व्यापक सहानुभूति और बाल सुलभ सरलता है।''

''टाल्सटाय आश्रम में पाठशाला भी चलती थी। हिन्दू मुसलमान तथा पारसी मिलकर किस प्रकार प्रेम–पूर्वक सामूहिक जीवन व्यतीत करते थे।''[9]

---

[7] कलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गाँधी, वाल्यूम 10, पब्लिकेषन डि0 गवर्नमेंट आफ इण्डिया पृ0–31
[8] कलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गाँधी, वाल्यूम 10, पब्लिकेषन डि0 गवर्नमेंट आफ इण्डिया पृ0–140
[9] सत्य के प्रयोग (आत्म कथा) मो0 क0 गाँधी पृ0 – 312

उन्होंने लिखा है :–

''टाल्सटाय आश्रम में बाहर से शिक्षक बुलाना आवश्यक जान पड़ा क्योंकि वर्तमान शिक्षा पद्धति मुझे पसन्द न था। ठीक पद्धति का अनुभव करके तो मैंने नहीं देखा था। इतना समझता था कि आदर्श स्थिति में सच्ची शिक्षा तो माँ–बाप के हाथों के नीचे ही हो सकती है। उस स्थिति में बाहरी मद्द कम से कम होनी चाहिए। मैंने सोचा टाल्सटाय आश्रम एक कुटुम्ब है और उसमें मैं पिता रूप हूँ इसलिए मुझे यथाशक्ति इन नवयुवकों के निर्माण की जिम्मेदारी उठानी चाहिए।''

टाल्सटाय आश्रम डरबन से 21 मील दूर था।

गाँधी जी अपने आत्मकथा में लिखते हैं :–

''मैंने हृदय की शिक्षा को अर्थात् चरित्र के विकास को सदा प्रथम पद दिया है। चरित्र को मैंने उनकी शिक्षा का आधार रूप माना था। बुनियाद मजबूत हो तो और बाते लड़के अवकाश मिलने पर दूसरों की सहायता लेकर या अपने आप सीख सकते हैं।

टाल्सटाय फार्म के विभिन्न प्रयोगों से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं :–

1. शिक्षा शारीरिक श्रम पर आधारित होनी चाहिए।
2. विद्यालय में नौकर की व्यवस्था ठीक नहीं है, स्वामी तथा नौकर का भाव ही विद्यालय में नहीं होना चाहिए।
3. आश्रम में पाखाने की सफाई से लेकर खेती तथा बागवानी चप्पल बनाना, बढ़ईगीरी आदि का काम बच्चे ही करते थे। शारीरिक शिक्षा निरुद्देश्य रूप से करने के बजाय सोद्देश्य हो तो उत्पादन तथा उससे स्वास्थ्य भी ठीक रहता है।
4. शिक्षा में खुली हवा अच्छे पानी और नियमित आहार का भी महत्व है।

आज शिक्षक केवल उपदेश देता है विद्यार्थियों से अपेक्षा करता है कि वे स्वावलम्बी और शरीर श्रम निष्ठ बनें किन्तु वह स्वयं कुछ श्रम नहीं करना चाहता। गाँधी जी ने यह नियम बना दिया था कि लड़कों से तब तक कोई काम न लिए जाए जब तक उसी काम को शिक्षक या अन्य लोग न करें।

ज्ञानात्मक कार्य के लिए तीन घण्टे रखे गये थे। शिक्षा मातृभाषा द्वारा देने का ही आग्रह था। अंग्रेजी सबको सिखाई जाती थी। इतिहास, भूगोल, अंकगणित सबको सिखाये जाते थे। तमिल एवं उर्दू स्वयं गाँधी जी पढ़ाते थे। यद्यपि इन भाषाओं का उनका ज्ञान बहुत थोड़ा था, फिर भी उन्हीं के शब्दों में –

''विद्यार्थियों के सामने अपना अज्ञान ढाकने की मैंने कभी कोशिश ही नहीं की। सब चीजों में जैसा था वैसा ही मुझे वे जान गये थे। अक्षर–ज्ञान की भारी न्यूवता होते हुए भी मैंने उनका प्रेम और आदर कभी नहीं गॅवाया।''[10]

पाठ्य–पुस्तकों के सम्बन्ध में गाँधी जी लिखते हैं –

''मेरी समझ में विद्यार्थी की पाठ्य–पुस्तक शिक्षक ही होता है। शिक्षकों ने पाठ्य–पुस्तकों में जो सिखाया जाता था, उसमें से थोड़ा ही मुझे याद है, जिन्होंने जवानी सिखाया था, उसकी याद आज भी बनी है। बालक आँख से जितना ग्रहण करता है उसकी अपेक्षा कान से सुना हुआ थोड़े परिश्रम से और ज्यादा ग्रहण कर सकता है।''

pEikju Ldy %

[10] सत्य के प्रयोग (आत्म कथा) मो0 क0 गाँधी पृ0 – 317

बिहार के एक पिछड़े जिले चम्पारन में भी गाँधी जी कुछ शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग किये। यहाँ बच्चों को बहुमुखी शिक्षा दी जाती थी। हिन्दी, गणित, इतिहास, भूगोल के साथ अतिरिक्त साधन के रूप में लड़के–लड़कियों के लिये औद्योगिक शिक्षण का प्रावधान था।

गाँधी जी की मान्यता थी कि चम्पारन स्कूल के अध्यापकों को गाँव के प्रौढ़ों से भी जुड़ना चाहिए तथा प्रत्येक अध्यापक को जागरूक ग्रामीण नेता के रूप में वयस्क लोगों का मित्र, दार्शनिक और पथ–प्रदर्शक बने। गाँधी जी ने चम्पारन स्कूल के अध्यापकों को स्पष्ट निर्देश दिए कि ग्राम–सेवा में भाग लें किन्तु ग्राम की राजनीति या किसी गुट से न जुड़े। इस प्रकार के कार्यों की सफलता के लिए उच्च कोटि के अध्यापकों की परम आवश्यकता है। शैक्षणिक योग्यताओं के अतिरिक्त उनमें नेतृत्व के गुण एवं सेवा की भावना का होना परम आवश्यक है।

lkcjerh vkJe e f'k{kk %

गाँधी जी ने राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना साबरमती आश्रम में की। मई 25, 1915 में एक किराए के मकान में आश्रम की स्थापना की गई और बाद में इसको साबरमती ले जाया गया। यहाँ प्रत्येक कार्य आश्रमवासियों द्वारा ही किया जाता था। छुआछूत एवं जाति में विश्वास नहीं किया जाता था। प्रारम्भ से ही इस बात पर जोर दिया जाता रहा कि महिलाओं का शोषण बन्द हो उन्हें रूढ़िवादिता और रीति–रिवाजों की जंजीरों से मुक्त कराया जाय। इन प्रयोगों से गाँधी जी को आशातीत सफलता मिली, गाँधी जी के शब्दों में :–

The education of Children is primarily a duty to be discharged by the parents. Therefore the creation of the vital educational atmosphere is more important than the foundation of numerous schools when once this atmosphere has been established on a firm footing the school will come in due course."

(Ashram observation in action, M.K. Gandhi Published by Navjeewan Publishing House Ahemdabad)

xqtjkr fo|kihB %

शिक्षा को नई दिशा देने के लिये एक गाँधी जी के स्वप्न को साकार करने के लिये सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गई थी। प्रसिद्ध राष्ट्रीय विद्यालयों में पटना का बिहारी विद्यापीठ, बनारस का काशी विद्यापीठ, दिल्ली का जामियॉ मिलिया और अहमदाबाद का गुजरात विद्यापीठ थे। इन राष्ट्रीय विद्यालयों को खोलने का प्रमुख उद्देश्य यह थे :–

1. वर्तमान शिक्षा राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है और उससे भारतीय समाज का लाभ नहीं होता।
2. वर्तमान शिक्षा के लोग जीवन तक पहुँचने की बात तो दूर रही, परिवार को भी उससे कोई लाभ नहीं मिलता।
3. शिक्षा में परिवर्तन लाने के लिये शासन की ओर देखना समय नष्ट करना है।
4. शिक्षा में शारीरिक मानसिक और धार्मिक पक्ष पर ध्यान दिया जायेगा।
5. शिक्षण प्रारम्भिक वर्षों में प्रधानतः मौखिक होगा।
6. विद्यार्थी परीक्षा के भय से मुक्त रहेगा।

7. स्कूल में कोई फीस नहीं ली जायेगी।
8. विद्यालय में अवैतनिक अध्यापक रखे जायेंगे।

1920 में गाँधी जी ने गुजराती विद्यापीठ की नींव डाली थी। आजकल इस विद्यापीठ का प्रमुख लक्ष्य शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के विभिन्न प्रयोग करना है, जिससे गाँधी जी विचारधारा मुखरित होकर समाज के सामने आए और हम शिक्षा को नया मोड़ दे सकें।

इस स्कूल के सम्बन्ध में गाँधी जी ने अपने कुछ विचार उस पत्र में व्यक्त किये हैं जो उन्होंने 2 मई, 1917 को बेतिया, मोतीहारी (बिहार) से स्वर्गीय काका कालेलकर को लिखा था।

[11]''हमें राष्ट्रीय शाला में फिलहाल तो 12 से 20 लड़के तक चाहिए। यदि वे अच्छे परिवार के हो तो अच्छा है, न हो तो भी ठीक है। यदि शास्त्री वाली जमीन में जाना पड़े तो पास के गाँ के लड़के भी बुलाये जा सकते हैं, किन्तु जब तक अहमदाबाद नगर के लड़के आ सके तब तक इस प्रयोग में गाँव के लड़कों को न लाना ज्यादा ठीक होगा। फिर भी इस बात पर कोई आग्रह रखने की जरूरत नहीं, जो लड़के मिलेंगे उन्हीं से काम चलेगा।''

श्री के0एल0 श्री माली ने–

गुजरात विद्यापीठ को अंधेरे में प्रकाश की संज्ञा दी है।

o/kkZ f'k{kk ;kstuk%

1937 में देश में इण्डियन नेशनल काँग्रेस की प्रान्तीय सरकारें बनीं। गाँधी जी ने देश के सुनहरे भविष्य के लिए सामाजिक क्रान्ति के रूप में शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर बल दिया। ''हरिजन'' में उन्होंने लिखा–

''बुद्धि का सच्चा विकास हाथ, पॉव, कान अवयवों के सदुपयोग से ही हो जाता है, मतलब यह कि ज्ञानपूर्वक शरीर–श्रम करते हुए बुद्धि का विकास उत्तम से उत्तम प्रकार से और शीघ्रता से होगा।''

''दूसरी ओर वर्तमान कालेज तक की शिक्षा देखे तो वहाँ बुद्धि के विकास को ही विकास कहा जाता है। माना जाता है कि बुद्धि के विकास के साथ शरीर का कोई सम्बन्ध नहीं है। मनुष्य केवल शरीर नहीं है, केवल बुद्धि नहीं है केवल हृदय तथा आत्मा नहीं है। तीनों के समान विकास से मनुष्य का मनुष्यत्व सधता है। इस प्रकार यदि इन तीनों का विसा साथ हो तो हमारी उलझी समस्यायें सहज ही सुलझ जाये।''[12]

गाँधी जी ने प्राथमिक शिक्षा पर विशेष बल दिया, उनके अनुसार :–

''प्राथमिक शिक्षा मेरी नजर में सबसे महत्वपूर्ण चीज है तथा शिक्षा को आत्म–निर्भर भी बनाना आवश्यक है। आप लोगों को याद रखना चाहिए कि इस प्राथमिक शिक्ष में सफाई अरोग्य और आहार–शास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्तों का समावेश भी हो जाता है। अपना काम खुद कर लेने तथा घर पर अपने माँ–बाप के काम में मदद देने बगैरह की शिक्षा भी इसमें शामिल है। वर्तमान पीढ़ी के लड़कों को न तो सफाई का ज्ञान है न वे यह जानते है कि आत्म–निर्भरता क्या चीज है, और व शरीर से भी काफी दुर्बल होते हैं।

---

[11] ''गाँधी जी की शिक्षा दर्शन'' – डॉ0 कमला द्विवेदी, पृ0 – 138

[12] द कलेक्ट्रेड वर्क्स आफ महात्मा गाँधी, पृ0 – 81–82

इसलिए मैं उन्हें लाजिमी तौर पर गाने और बाजे के साथ कवायद बगैरह के जरिए शारीरिक व्यायाम की भी तामील दूँगा।''[13]

गाँधी जी के नेतृत्व में 22 अक्टूबर को शिक्षा सम्मेलन निम्न प्रस्तावों पर पहुँचा –

1. इस कान्फ्रेन्स की राय में देश के सब बच्चों के लिए सात वर्ष की मुफ्त और लाजमी तालीम का इन्तजाम होना चाहिए।
2. तालीम का जरिया मातृभाषा होनी चाहिए।
3. यह कान्फ्रेन्स महात्मा गाँधी की इस तजवीज की ताईद करती है कि इस तमाम मुद्दत में शिक्षा का मध्य बिन्दु किसी किस्म की दस्तकारी होना चाहिए, जिससे कुछ मुनाफा हो सके, बच्चों में जो कुछ अच्छे गुण पैदा करने है और उनको जो शिक्षा–दीक्षा देना है, वह जहाँ तक हो सके इसी केन्द्रीय दस्तकारी से सम्बन्ध रखती हो और इस दस्तकारी का चुनाव बच्चों का लिहाज रखकर किया जाय।

गाँधी जी प्राथमिक स्तर से शिक्षा को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। उनके स्वावलम्बी शिक्षा का समर्थन करते हुए आचार्य विनोबा भावे ने कहा था –

''स्वावलम्बी से मेरा मतलब यह है कि तालीम पा चुकने के बाद बालक अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बन जाए। लेकिन अगर तालीम पा चुकने के बाद लड़का स्वावलम्बी नहीं होता है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि तालीम दे कर हमने क्या किया।''[14]

गाँधी जी ने वर्धा सम्मेलन में कहा –

''मैं जिस बात के लिये उत्सुक हूँ कि दस्तकारी के जरिये विद्यार्थी जो कुछ पैसा पैदा करें, उसकी कीमत से शिक्षा का खर्च निकल आए, क्योंकि मुझे यकीन है कि देश के करोड़ों बच्चों को तालिम देने के सिवाय इसका दूसरा कोई रास्ता नहीं है और न यहीं मुमकिन है कि हम उस वक्त तक ठहरे रहे जबकि सरकार अपने खजाने से हमें आवश्यक रूपया दें या वाइसराय फौजी खर्च कम कर दे या इसी तरह का कोई और कारगर जरिया निकल आए।''[15]

cfu;knh f'k{kk %

ikB;Øe &

''स्कूल का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना है। ऐसा कहा जाता है कि वास्तविक शिक्षा वह है जो बच्चे को सीखने की कला सिखाये। दूसरे शब्दों में शान की पिपासा उसमें जाग्रत होनी चाहिए।''[16]

''गाँधी जी के अनुसार शारीरिक शिक्षा सोद्देश्य एवं समाजोपयोगी होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में गाँधी जी आत्मा को शिक्षित करने को बड़ा महत्व देते थे।''[17] बुनियादी शिक्षा में स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता पर विशेष ध्यान दिया था।

le; lkfj.kh %

बुनियादी शिक्षा योजना के अन्तर्गत कुल 5 घंटके 30 मिनट अध्ययन करना है। उक्त समय में बुनियादी शिल्प, मातृभाषा संगीत, चित्रकला, अंकगणित, सामाजिक अध्ययन

---

[13] द कलेक्ट्रेड वर्क्स आफ महात्मा गाँधी, पृ0 – 295

[14] बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा (वर्धा शिक्षा परिषद, 1937), पृ0–38

[15] ''गाँधी जी की शिक्षा दर्शन'' – डॉ0 कमला द्विवेदी

[16] कलेक्ट्रेड वर्क्स आफ महात्मा गाँधी, वाल्यूम–9, पृ0 – 138

[17] मो0 क0 गाँधी (आत्मकथा), पृ0 318–20

व सामान्य विज्ञान तथा शारीरिक शिक्षा विषयों का अध्ययन करना था। इसके अतिरिक्त एक वर्ष में 288 दिन कार्य करना आवश्यक माना गया।

v/;kid %

गाँधी जी ने कहा था कि वे अज्ञानी व्यक्ति को प्राचार्य बना लेंगे यदि उसमें आध्यात्मिकता है किन्तु विद्वान को नहीं यदि उसमें आध्यत्मिकता नहीं है। आज शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया कहाँ तक शिक्षक के आदर्शों के अनुकूल है यह विचारणीय है। वैसे–बुनियादी शिक्षा हेतु प्रशिक्षित एवं क्षेत्रीय अध्यापकों को ही नियुक्त किया जाता था।

v/;kiu fof/k %

बुनियादी शिक्षा में अध्यापन पद्धति सामान्य शिक्षण विधि से भिन्न है। इसमें अध्यापन का कार्य क्रियाओं एवं अनुभवों के माध्यम से किया जाता है। शारीरिक श्रम के कार्यों में विद्यार्थी के साथ अध्यापक भी कार्य करें। शिक्षक परावलम्बी हो और विद्यार्थी से यह आशा की जाये कि वह स्वावलम्बी बनेगा यह कोरी कल्पना है।

cfu;knh f'k{kk d fl)kUr vkj mnn'; %

बुनियादी से केवल प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा का तात्पर्य नहीं है वरन् वह शिक्षा जो मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। गाँधी जी ने शरीर–श्रम की बुनियादी शिक्षा का आधार बनाया यह मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। स्वावलम्बन उक्त शिक्षा का प्रमुख पहलू है। इस शिक्षा का माध्यम ''मातृभाषा'' है।

गाँधी जी के बुनियादी–दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त यह है कि हर काम का समाज में समान महत्व है, जब काम के प्रति समदृष्टि होगी, जब हर व्यक्ति अपनी क्षमता और रूचि के अनुसार कार्य करेगा तो समाज में भेद–भाव एवं असमानता की भावना न रहेगी। समाज में संघर्ष दूर होगा तथा सहयोग एवं प्रेम की भावना का विस्तार होगा।

xk/kh f'k{kk&n'ku dh vk/kfud f'k{kk e ;kxnku dh vko';drk %

''आज हर स्तर पर शिक्षा की विषय वस्तु में परिवर्तन करने की आवश्यकता है जिससे शिक्षा की प्रक्रिया लोगों की क्षमताओं और वास्तविक आवश्यकताओं से सक्रिय रूप से सम्बद्ध हो सके। उत्पाद कार्य में भाग लेना हर स्तर पर शिक्षा का अनिवार्य अंग होगा चाहिए।''

गाँधी जी के विचारों का समावेश तत्कालीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रारूप में किया गया, यद्यपि गाँधी जी के उद्योग के माध्यम से शिक्षा के सिद्धान्त को समाजोपयोग उत्पादक कार्य की संज्ञा दी गई। गाँधी जी की उच्च शिक्षा की संकल्पना आज की शिक्षा की तरह एक ''सफद हाथी'' नहीं है। उसमें नए समाज की नयी सामाजिक क्रान्ति की संकल्पना थी। इस बात पर बल देना आवश्यक है कि जब तक शिक्षा स्वावलम्बन की शिक्षा नहीं बनती, जब तक जर्जर डिग्रियों को सम्मान देने की प्रथा प्राप्त नहीं की जाती तब तक शिक्षा देश की आवश्यकताओं की पूर्ति ठीक ढंग से नहीं कर सकती।

एक प्रश्न यह उठाया जाता है कि जब दूसरे देश बड़े–बड़े कल–कारखानों पर निर्भर करते हैं तो कैसे छोटे उद्योगों की बात की जा सकती है। वास्तविकता यह है कि आज समृद्ध राष्ट्रों का व्यापार पिछड़े हुए राष्ट्रो के प्राकृतिक साधनो, या उन्हें बाजार के रूप में, उपभोक्ता के रूप में रखने पर निर्भर है। शोषण पर पूरी आर्थिक व्यवस्था निर्भर है। युद्धास्त्रों पर बहुत से समृद्ध देशों की समृद्धि निर्भर करती है। यदि पिछड़े हुये देश पर यह निर्णय कर लें कि वे शोषण नहीं होने देंगे, आत्मनिर्भर बनेंगे और युद्ध का परित्याग करेंगे तो समाज में विषमता दूर हो सकती है और शान्ति की सम्भावना बढ़ सकती है। यह

कल्पना असम्भव नहीं है। असम्भव हो तो भी उस दिशा में निरन्तर प्रयास करना अनिवार्य प्रतीत होता है।[18]

इसलिये केवल अपने देश में ही नहीं पूरे विश्व में गाँधी शिक्षा–दर्शन का प्रचार और विस्तार आवश्यक है। यह स्पष्ट है कि आज जो शिक्षा न केवल अपने देश में प्रत्युत पूरे विश्व में चल रही है। उसका लक्ष्य समाज के दो वर्गों में बाँटना है– एक समूह दूसरा शोषित और गरीब। इसलिये ऐसी शिक्षा आवश्यकता है, जिससे मनुष्य की श्रम के प्रति निष्ठा हो, सबमें समानता का भाव हो। जीवन को मशीन की संस्कृति से छुटकारा दिलाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

[18] गाँधी जी का शिक्षा दर्शन – डा0 कमला द्विवेदी